बहुत सारी हैं उम्मीद की किरणें : पूजा नेगी

शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड के अंतर्गत उप शिक्षा अधिकारी के रूप में देहारादून के कालसी ब्लॉक में 2015 से कार्यरत पूजा नेगी शिक्षा को सामाजिक बदलाव का महत्वपूर्ण जरिया मानती हैं। यही वजह है कि वो शिक्षा को बेहतर करने को लेकर यथासंभव प्रयास करती रहती हैं। इस बारे में उन्होंने अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथी अनूप कुमार बडोला से बात की–

आज की सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था को लेकर आप क्या सोचती हैं?

हमारे सरकारी स्कूलों में आने वाले ज्यादातर बच्चे पहली पीढ़ी के सीखने वाले बच्चे हैं। ऐसी स्थिति में हमें उन बच्चों के लिए स्पेस बनाने में व भावनात्मक रूप से जुडने में समय लेना आवश्यक है। इस संदर्भ में हमें शिक्षकों के साथ गहन काम करना जरूरी है। ऐसी स्थितियों में प्राथमिक कक्षाओं में वार्षिक रिज़ल्ट से ज्यादा नियमित रूप से बच्चों के विकास को आंकना जरूरी है जैसी अपेक्षा सतत व व्यापक मूल्यांकन में की गयी है। सार्वजनिक शिक्षा उस एक बड़े समुदाय– जो वर्षों से शिक्षा से वंचित रहे हैं के लिए है और सबसे अच्छा तो यह लगता है कि इसी व्यवस्था में उन बच्चों के लिए भी जगह है जो स्पेशल आवश्यकता वाले हैं। हम समावेशी शिक्षा को स्थापित करने में सफल रहे हैं।

शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन को आप किस तरह देखती हैं?

शिक्षा की मुख्य धुरी बच्चा व शिक्षक हैं। शिक्षक को प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षण विधियों में बदलाव लाना आवश्यक है, क्योंकि इस स्तर पर बच्चे आनंद के साथ जितना भी सीख सके वह उनको स्कूल में बनाए रखने में मदद करेगा। ऐसी बहुत सी विधियां हमारे मौजूदा प्रशिक्षण का हिस्सा बनें। हमारी नयी किताबों में अवश्य अंतर नजर आता है जो शिक्षकों व बच्चों को मदद करता है। मेरा मानना है कि प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए विषयगत ज्ञान से ज्यादा आवश्यक है कि बाल मनोविज्ञान को समझना व उन पर निरंतर काम करना। क्योंकि बाल मनोविज्ञान शिक्षकों को बच्चे की वास्तविक मनोदशा को समझकर उपयुक्त प्रयास करने में मदद करता है। मैं स्वयं जब स्कूलों में जाती हूँ तो यह जानने कि कोशिश करती हूँ कि बच्चों को स्कूलों में कैसा महसूस हो रहा है। साथ ही मुझे इस बात से बड़ा ऐतराज है कि शिक्षक बच्चों को लेबल करने लगते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में किस तरह की चुनौतियों को देखती हैं?

मुझे लगता है कि एक बड़ी चुनौती जिस पर हम सबको काम करना चाहिए वह है सरकारी शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण बदलना। इसे बनाने में मीडिया के अलावा हमारा भी दोष है। इससे लोगों का रुझान सार्वजनिक शिक्षा के विपरीत होता जा रहा है। इस दृष्टिकोण को बदलने में शिक्षा विभाग से जुड़ा हर व्यक्ति सबसे पहले अपनी व्यवस्था के बारे में सकारात्मक बातें समाज में स्थापित करे। मेरी राय में भौतिक संसाधन महत्वपूर्ण तो हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण नहीं हैं। यदि हमारा क्वालिफाइड शिक्षक शिक्षण की गुणवत्ता को अच्छा बना दे तो यह बात गौण हो जाती है। सरकारी स्कूलों की प्राइवेट स्कूलों के साथ तुलना उचित नहीं है। दोनों के संदर्भ अलग हैं।

वो कौन सी उम्मीद की किरणें हैं जिनके चलते आने वाले समय में शिक्षा को बेहतर रूप में देखा जा सकता है?

मेरे ब्लॉक में मुझे नए आए शिक्षक/शिक्षिकाओं में उम्मीद की किरण दिखती है। उनमें काफी ऊर्जा है, वे काफी कुछ नया लेकर आए हैं। यदि उनको प्रोत्साहन दिया जाता रहे तो आने वाले समय में तस्वीर बदलने की उम्मीद है। हमारे पिछले कुछ प्रयासों से शिक्षकों में विश्वास बढ़ा है।

अपने ब्लॉक में शिक्षा व शिक्षकों की बेहतरी के लिए आपके पास क्या कोई त्वरित पक्की योजना है जिसे आप आने वाले समय में लागू करने वाली हों?

शुरू में काफी योजनाएं दिमाग में थी लेकिन स्थिति को समझने के बाद अभी सोचा है कि शिक्षक व समुदाय में सकारात्मकता लाने के लिए प्रयास करूं। शिक्षकों को नवाचार के लिए अवसर व प्रेरणा देती रहूं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को जारी रखने पर मेरा ज़ोर रहेगा जो शिक्षकों को बच्चों के लिए आनंददायी वातावरण बनाने में मदद करे।